आवश्यक सूचनाएँ

परिसर के समय : मंगलवार से रविवार (प्रत्येक सोमवार को संपूर्ण बंद)

प्रवेश प्रारंभ : प्रात: ९.३०
प्रवेश बंद : सायं ६.३०

परिसर में **मूर्तिदर्शन** (नि:शुल्क) के उपरांत, **सहजानंद दर्शन प्रदर्शनी** (सशुल्क), **विराटकाय चित्रपट : नीलकंठ यात्रा** (सशुल्क), **संस्कृति विहार प्रदर्शनी** (सशुल्क), **प्रेमवती उपाहार गृह** (सशुल्क), **पार्किंग** (सशुल्क) आदि सेवाएं भी उपरोक्त समय दौरान उपलब्ध है। **संगीतमय फव्वारे** (सशुल्क) नित्य सायं आयोजित है।

परिसर में सर्वथा निषिद्ध हैं -

■ फ़ोटोग्राफी-वीडियोग्राफी ■ मोबाईल फोन, कैमेरा, रेडियो, टैपरिकार्डर और किसी भी प्रकार का इलैक्ट्रोनिक उपकरण ■ बैग और अन्य सामान ■ बाहरी पेय और खाद्य सामग्री ■ धूम्रपान, मदिरापान, तम्बाकूसेवन, अन्य नशीली चीज़ें ■ असभ्य वस्त्रपरिधान ■ नारे और असभ्य भाषाप्रयोग ■ पालतू प्राणी

असुविधा के लिए क्षमा करें।

नम्र निवेदन

भारतीय संस्कृति के इस परिसर में आपकी यह मुलाकात एक यात्रा है - पवित्र भावनाओं से छलकती दिव्य तीर्थ भूमि की, जो आपको दिव्य प्रेरणाओं से धन्य कर सकती है। कृपया इस तीर्थधाम की गरिमा को बनाए रखने में सहयोग दें।

परिसर में प्रवेश के लिए सभी अधिकार संचालनकर्ता के अधीन है।

BAPS

स्वामिनारायण अक्षरधाम,
अक्षरधाम सेतु, राष्ट्रीय मार्ग २४,
नई दिल्ली - 110092
दूरभाष : (011) 4344 2344
फेक्स : (011) 4344 2323
www.akshardham.com
www.baps.org

Designed & Printed by: © Swaminarayan Aksharpith, Ahmedabad - 380 004, INDIA. A/16

B H 9 5 1

Rs. 5/-

HINDI

मार्गदर्शिका

स्वामिनारायण अक्षरधाम

भारत की राजधानी नई दिल्ली में नवनिर्मित स्वामिनारायण अक्षरधाम एक अभिनव संस्कृति-तीर्थ है। यह अद्वितीय परिसर है - भारतीय कला, प्रज्ञा, चिंतन, और मूल्यों का। यह एक समयातीत सर्जन है, जो भारतीय संस्कृति के ज्योतिर्धर भगवान श्री स्वामिनारायण (सन् १७८१-१८३०) की पुण्य स्मृति में रचा गया है। संतविभूति प्रमुखस्वामी महाराज द्वारा केवल पाँच वर्ष में निर्मित यह विशाल परिसर, १०० एकड़ भूमि में फैला हुआ है। शान्ति, सौंदर्य एवं दिव्यता के इस परिसर में आपका हार्दिक स्वागत है !

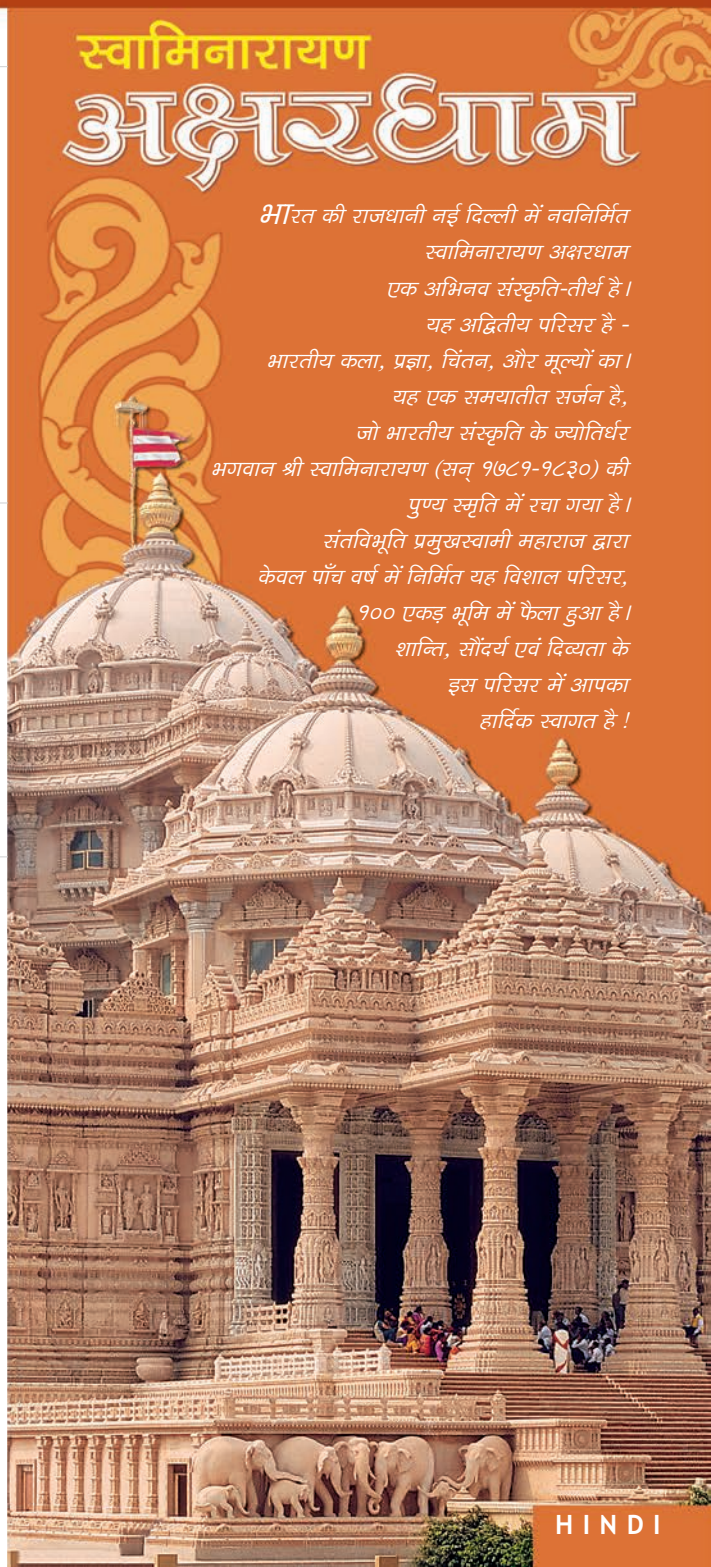

स्वा ग त द्वा र

1

2

3

4

सर्जक

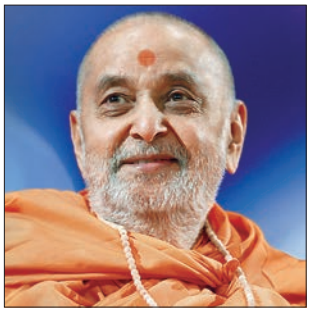

संतविभूति प्रमुखस्वामी महाराज

सन् १९६८ में एक दिव्य महापुरुष योगीजी महाराज ने आशीर्वाद दिया था – 'यहाँ यमुना के तट पर भव्य आध्यात्मिक महालय बनेगा।' यह एक आर्षदर्शन था स्वामिनारायण अक्षरधाम का। दशकों के बाद ६ नवम्बर २००५ को वह एक भव्य सृजन बना – विश्ववंदनीय प्रमुखस्वामी महाराज के द्वारा, जिन्होंने अपने गुरुजी के उस संकल्प को साकार किया।

प्रमुखस्वामी महाराज एक विरल संतविभूति हैं, जो भगवान स्वामिनारायण की गुणातीत गुरुपरंपरा के पाँचवें गुरुदेव हैं। आदिवासियों से लेकर समस्त मानवजाति के नैतिक, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक उत्कर्ष के लिए जिन्होंने अपने आपको समर्पित कर दिया है। बी.ए.पी.एस. स्वामिनारायण संस्था के सूत्रधार के रूप में सेवा के सभी क्षेत्रों में आपका प्रदान अनन्य रहा है।

हृदयस्पर्शी विनम्रता, सहजता एवं भगवत् साक्षात्कार आपके दिव्य व्यक्तित्व की अपरिमित ऊँचाई के प्रमाण हैं।

आपके दिव्य सत्संग से असंख्य लोगों ने आध्यात्मिक ऊंचाई प्राप्त की है, असंख्य प्राप्त कर रहे हैं।

संवाहक : बी.ए.पी.एस. स्वामिनारायण संस्था

स्वामिनारायण अक्षरधाम के निर्माण और संवहन का उत्तरदायित्व निभाया है – बी.ए.पी.एस. स्वामिनारायण संस्था ने। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा मान्यता प्राप्त यह संस्था एक अंतर्राष्ट्रीय सामाजिक-आध्यात्मिक संस्था है, जो गत एक शताब्दी से मानव-सेवा में रत है। ३,८५० सत्संग केन्द्रों एवं १८,००० सत्संग सभाओं, १००० नवयुवा सुशिक्षित संतों, ५५,००० स्वयंसेवकों और लाखों अनुयायियों के द्वारा यह संस्था शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण, सामाजिक, नैतिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक आदि क्षेत्रों में अनेकविध मानव-सेवाओं में निरंतर प्रवृत्त है।

HINDI

आ क र्ष ण

19

19 भारत उपवन - सांस्कृतिक उद्यान

अक्षरधाम के समक्ष २२ एकड़ में फैले भारत उपवन में, ऊँची हरी ढ़लानों के बीच वृक्षों और पुष्प-पौधों का कलात्मक अभियोजन किया गया है। यहाँ दोनों ओर भारत के महान् व्यक्तित्वों के ८' फुट ऊँचे ६५ कांस्यशिल्प, राष्ट्रीय गौरव की अनुभूति कराते हैं। यहाँ से अक्षरधाम का दर्शन अत्यन्त चित्ताकर्षक लगता है।

- *जलपान की सुविधा प्रवेश पर उपलब्ध है।*

देखना मत भूलें

■ सूर्यप्रकाश के सात रंगों के प्रतीकरूप सात अश्वों का अनुपम सूर्यरथ। ■ चंद्र की सोलह कलाओं के प्रतीकरूप १६ हिरनों का अद्‌भुत चन्द्ररथ। ■ भारतीय वीररत्न, महान् स्त्रीरत्न, प्रतिभावंत भारतीय बालरत्न, एवं राष्ट्र के निर्माण में योगदान देनेवाले महान् राष्ट्ररत्न के अभूतपूर्व कांस्यशिल्प।

1 दश द्वार

यहाँ दश द्वार दसों दिशाओं के प्रतीक हैं, जो वैदिक शुभकामनाओं को प्रतिबिंबित करते हैं : 'समग्र ब्रह्मांड में जो भी मांगलिक है, दिव्य है, वह दसों दिशाओं से हमारी ओर प्रवाहित हो, और हमारे हृदय से शुभतत्त्वों का सर्वत्र मंगल विस्तार हो।'

2 भक्ति द्वार

परंपरागत भारतीय शैली का यह प्रवेशद्वार आपको ले चलता है, भक्तिभाव के एक अनोखे विश्व में। भक्ति अर्थात् परमात्मा के प्रति विशुद्ध प्रेम। सनातन धर्म परंपरा में भक्त-भगवान के दिव्य युगल भक्ति के आदर्शों का शाश्वत बोध देते हैं। भक्ति एवं उपासना के ऐसे २०८ युगल स्वरूप इस भक्तिद्वार में मंडित हैं।

3 मयूर द्वार

भारत का राष्ट्रीय पक्षी मयूर सौंदर्य, संयम एवं शुचिता के प्रतीक के रूप में भारतीयों का सर्वकालीन प्रिय पक्षी रहा है। अक्षरधाम के इस स्वागतद्वार में परस्पर गूंथे गए भव्य मयूरतोरण एवं कलामंडित स्तंभों के ८६९ मयूर आनंदनृत्य कर रहे हैं, आपके सत्कार में। मयूरद्वार भारतीय शिल्पकला की सुंदरतम कृति है।

4 श्रीहरि चरणारविंद

दो मयूरद्वारों के मध्य में १६ मांगलिक चिह्नों से अंकित ये श्रीहरि-चरणारविंद, इस धरा पर भगवान श्रीस्वामिनारायण के दिव्य अवतरण की स्मृति में स्थापित किये गये हैं। श्वेत संगमरमर से शिल्पांकृत इस श्रीहरि-चरणारविंद पर चार शंखों द्वारा जलधाराओं का अभिषेक, भगवान स्वामिनारायण के ऐतिहासिक जीवन एवं कार्य के प्रति भावांजलि अर्पण करता है।

- *यहाँ से यात्री अक्षरधाम मन्दिर या भारत उपवन की ओर जा सकता है।*

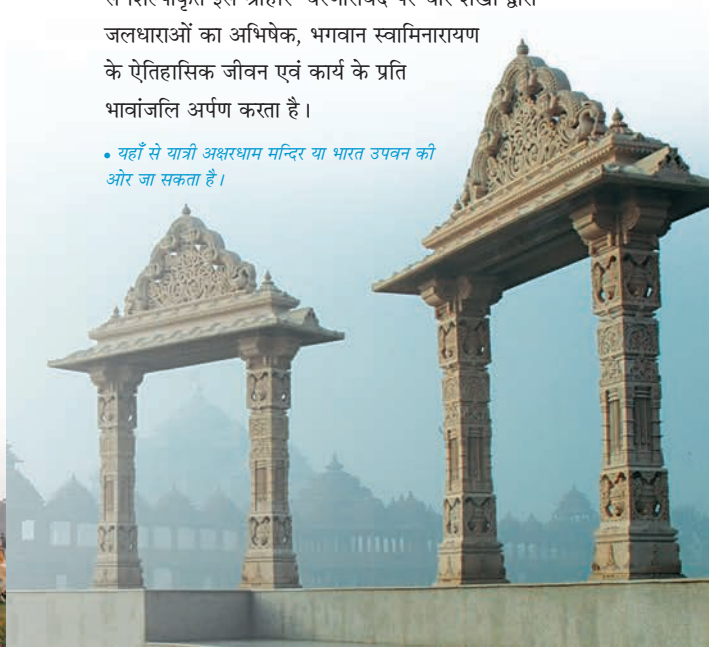

अ क्ष र धा म म न्दि र

5

6

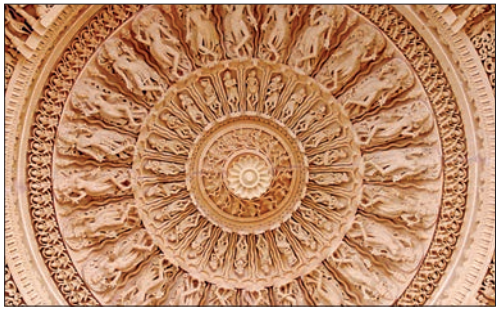

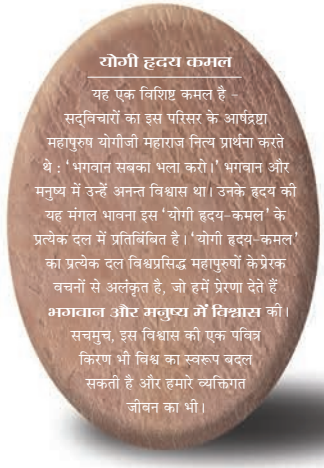

16 योगी हृदय कमल

मनोहारी ढ़लान पर छाई हरी घास के मध्य में यह एक विशाल अष्टदल कमल है - पवित्र भावनाओं का। विश्व के महापुरुषों और धर्मशास्त्रों ने भगवान और मानव में दर्शाया हुआ असीम विश्वास यहाँ शिलालेखों में प्रस्तुत है।

17 प्रेमवती आहारगृह

अजंता की अद्भुत कलासृष्टि के आह्लादक वातावरण में, विशाल प्रेमवती आहारगृह शुद्ध और ताज़ा भोजन एवं मधुर जलपान की सुविधा प्रदान करता है।

18 अक्षरधाम हाट

विविध भाषाओं में संस्कार प्रेरक धार्मिक साहित्य, भक्तिभाव प्रकटाते ऑडियो-वीडियो प्रकाशन, व्यूकार्डस्, स्मरणिकाएँ, स्नेहियों को भेंट देने योग्य स्मृतिचिह्न, अमृत हर्बलकेर औषधियाँ तथा पूजा सामग्री इत्यादि आप यहाँ से क्रय कर सकते हैं।

- *बाहर शौचालय की सुविधा है।*

HINDI

16

17

18

5 अक्षरधाम मन्दिर

विशाल परिसर के केन्द्र में है भव्य मन्दिर अक्षरधाम। गुलाबी पत्थर और श्वेत संगमरमर के संयोजन से बनाये गए इस मन्दिर में, २३४ कलामंडित स्तम्भ, ९ कलायुक्त घुमट-मंडपम्, २० चतुष्कोण शिखर और २०,००० से भी अधिक कलात्मक शिल्प हैं। इसकी ऊँचाई है १४१ फुट, चौड़ाई है ३१६ फुट और लंबाई है ३५६ फुट। बिना लोह के रचे गये इस मन्दिर में, प्राचीन भारतीय स्थापत्य परंपरा को पुनर्जीवित किया गया है।

6 मूर्ति

मन्दिर के मध्य में भगवान स्वामिनारायण की पंचधातु से निर्मित स्वर्णमंडित ११ फुट ऊँची मूर्ति नयनाभिराम है।
कलामंडित सिंहासनों में विराजमान भगवान श्री लक्ष्मीनारायण, श्रीरामचंद्र-सीताजी, श्रीकृष्ण-राधाजी और श्रीमहादेव-पार्वतीजी की संगमरमर की मूर्तियाँ दर्शनीय हैं।

देखना मत भूलें

अक्षरधाम स्मारक के अंदर

■ पाँचरात्र आगमशास्त्र के अनुसार परमात्मा के २४ केशवादि स्वरूपों के दुर्लभ चतुर्भुज शिल्प। ■ संगमरमर के कलामंडित स्तम्भों पर संतों-भक्तों के दर्शनीय शिल्प। ■ स्तम्भ के ऊपर ५०० परमहंस संतों की सेवामुद्रा में विविध मूर्तियां। ■ संगमरमर के ६५ फुट ऊँचे लीलामंडपम्, भक्तमंडपम्, स्मृतिमंडपम् तथा परमहंस-मंडपम् की अद्‌भुत शिल्पकला। ■ भगवान स्वामिनारायण की लीलाओं के शिल्पों से अलंकृत घनश्याम मंडपम्, नीलकंठ मंडपम्, सहजानन्द मंडपम्, स्वामिनारायण मंडपम्। ■ भगवान स्वामिनारायण की ऐतिहासिक कुमकुम चरणमुद्रा, माला, पादुका, उनका वस्त्र आदि प्रासादिक चीज़ों का अलंकृत स्मृतिमंडपम् ■ ९ घुमट-मंडपों एवं २० चतुष्कोण शिखरों का अभूतपूर्व संयोजन, जो प्राचीन भारतीय इजनेरी विद्या का एक अद्‌भुत नमूना है।

7

8

12 यज्ञपुरुष कुण्ड, सहज आनंद वॉटर शॉ

समयावधि २५ मिनट

लाल पत्थरों से निर्मित यह कुण्ड प्राचीन भारतीय कुण्ड परंपरा का विशालतम कुण्ड है। कमलाकार जलकुण्ड, प्रत्येक संध्या को अद्वितीय 'सहज आनंद वॉटर शॉ' का मंच बन जाता है – जहाँ संगीतमय फ़व्वारे की लहरें, प्रकाश का हृदयंगम संयोजन, लेसर किरणों का मनोहर नृत्य, विराट प्रोजेक्शन एवं हृदयस्पर्शी संवादों के साथ प्राचीन भारतीय उपनिषदों का आध्यात्मिक संदेश प्रस्तुत होता है। कुण्ड के सामने स्थापित २७ फुट ऊँचा बालयोगी नीलकंठ ब्रह्मचारी का मनोहर धातुशिल्प पवित्र प्रेरणा देता है।

- *सहज आनंद वॉटर शॉ (सशुल्क) : नित्य सायं*

13 नारायण सरोवर

वैदिक समय से भारत में प्रचलित जलतीर्थों की महिमापूर्ण परंपरा का अनुसरण करते हुए अक्षरधाम मन्दिर की तीनों ओर इस नारायण सरोवर की रचना की गई है। पवित्र मानसरोवर से लेकर १५१ तीर्थों और नदियों के पवित्र जलसिंचन से यह नारायण सरोवर परम पवित्र तीर्थ बना है। जलतीर्थ की चारों ओर १०८ गौमुख से बहती पवित्र जलधाराएँ भगवान के पावनकारी १०८ नामों का प्रतीक है।

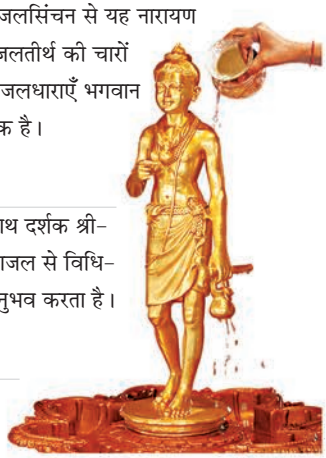

14 अभिषेक मण्डपम्

शुभकामनाओं एवं प्रार्थनाओं के साथ दर्शक श्री-नीलकंठ ब्रह्मचारी की मूर्ति पर गंगाजल से विधि-पूर्वक अभिषेक कर धन्यता का अनुभव करता है।

15 परिक्रमा

लाल पत्थरों में से निर्मित १५५ चतुष्कोण शिखरों, ११५२ स्तम्भों और १४५ झरोंखों से युक्त दो मंज़िली परिक्रमा अक्षरधाम की चारों ओर पुष्पमाला की तरह शोभायमान है।

आ क र्ष ण

12

12

13

14

15

7 मंडोवर

'मंडोवर' अर्थात् मन्दिर की बाह्य दीवार। इसकी कुल लम्बाई ६११ फुट और ऊँचाई २५ फुट है। गढ़े हुए ४२८७ पत्थरों से निर्मित यह मंडोवर प्राचीन भारतीय नागरादि शैली के स्थापत्यों में सबसे बड़ा है। गहन अनुशोधन के पश्चात् इसमें प्राचीन भारतीय महापुरुषों-ऋषियों-आचार्यों-देवताओं के ऐतिहासिक २४८ कलात्मक शिल्पों की स्थापना की गई है।

8 गजेन्द्र पीठ

अक्षरधाम का भव्य महालय १०७० फुट लम्बी गजेन्द्रपीठ पर स्थित है, जो ३,००० टन पत्थरों से निर्मित है और विश्व की एक मौलिक एवं अद्वितीय शिल्पमाल है। जीवंत कद के १४८ हाथियों की यह कलात्मक गाथा, प्राणीसृष्टि के प्रति एक विनम्र भावांजलि है। भारतीय बोधकथाओं, लोककथाओं, पौराणिक आख्यानों इत्यादि से ८० दृश्य यहाँ पत्थरों में तराशे गए हैं, जो प्रेरक संदेश देते हैं।

देखना मत भूलें

अक्षरधाम स्मारक के बाहर

■ अक्षरधाम की बाहरी दीवारों पर चारों ओर स्थापित भारतीय संस्कृति के महान् ज्योतिर्धर संतों, भक्तों, आचार्यों, विभूतियों के २४८ मूर्ति-शिल्प। ■ भव्य प्रवेशमंडपम् की अद्वितीय स्तंभ-कलाकृति। ■ छत में सरस्वती, लक्ष्मी, पार्वती आदि देवियों और गोपी-कृष्ण रास के अद्‌भुत शिल्प। ■ नारायणपीठ में भगवान स्वामिनारायण के दिव्य चरित्रों के कुल १८० फुट लंबे कलात्मक धातुशिल्प।

गजेन्द्र पीठ

■ प्रत्येक हाथी के साथ बदलती कलात्मक हाथीमुद्राएं एवं कथाएं । ■ 'हाथी और प्रकृति' विभाग में पंचतंत्र की कथाओं के प्रकृति की गोद में क्रीडा करते हाथियों की मोहक मुद्राएं। ■ 'हाथी और मानव' विभाग में समाजजीवन से समरस हाथियों की कथाएं। ■ 'हाथी और दिव्य तत्त्व' विभाग में धर्म-परम्पराओं में हाथी की गाथाएं।

प्र द र्श नी

9

10

11

9 खण्ड - १ : सहजानंद दर्शन

प्रेरणादायक अनुभूति समयावधि ५० मिनट

रोबोटिक्स-एनिमेट्रोनिक्स, ध्वनि-प्रकाश, सराउण्ड डायोरामा आदि आधुनिकतम तकनिकों के माध्यम से श्रद्धा, अहिंसा, करुणा, शान्ति आदि सनातन मूल्यों की अद्‌भुत प्रस्तुति है। प्रत्येक प्रस्तुति नई अनुभूति और नया प्रेरणासंदेश देता है - भगवान स्वामिनारायण के जीवन-प्रसंगों के द्वारा।

10 खण्ड - २ : नीलकंठ दर्शन

महाकाय चित्रपट समयावधि ४० मिनट

महाकाव्य सी फ़िल्म, जो दिलधड़क दृश्यों के साथ गाथा सुनाती है बालयोगी नीलकंठ की, जिन्होंने ७ वर्ष तक नंगे पैर १२,००० कि.मि. भारत की पदयात्रा की थी। ८५ × ६५ फूट के महाकाय चित्रपट पर देखें - १९वीं सदी के भारत की एक झलक। १०८ स्थलों पर फ़िल्मांकन, ४५,००० पात्र और दिलधडक दृश्यों की दृश्यावलि आदि से यह फ़िल्म अभिभूत कर देती है। सत्य घटना पर आधारित इस फ़िल्म में भारत के तीर्थों, उत्सवों, सांस्कृतिक परम्पराओं और उच्च मूल्यों को प्रस्तुत किया गया है।

11 खण्ड - ३ : संस्कृति विहार

नौकाविहार समयावधि १५ मिनट

१४ मिनट में १०,००० वर्ष पुरानी भारतीय संस्कृति की भव्यता की यहाँ एक अद्‌भुत झाँकी मिलती है - नौकाविहार के द्वारा। ८०० पूतलों एवं कई संशोधनपूर्ण प्रमाणभूत रचनाओं से, सरस्वती नदी के तट पर पनपी भारतीय संस्कृति का प्राचीन युग मानों यहाँ सजीवन हो गया है। विश्व की सर्वप्रथम युनिवर्सिटी तक्षशिला, सुश्रुत का प्राचीन अस्पताल, नागार्जुन की रसायन प्रयोगशाला आदि के मध्य ले जाकर यह विहार, भारत के गौरवपूर्ण प्रदान एवं भव्य इतिहास को हमारी आँखों के समक्ष खड़ा कर देता है।

- *उपरोक्त प्रत्येक खंड के प्रवेश एवं निकास पर जलपान एवं शौचालय की सुविधा है।*
- *प्रत्येक प्रदर्शनी में प्रवेश सशुल्क है।*